



# पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 5

अंक : 10

जून-2018

मूल्य : ₹2.00



पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. बी. आर. छीपा

## कुलपति सन्देश

### आपदाओं से पशुधन का बचाव हमारी प्राथमिकताओं में शामिल है



प्रो. बी.आर. छीपा

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाई और बहनों ! राम-राम सा !

वैश्विक जलवायु में हो रहे परिवर्तन और प्राकृतिक व मानव जनित आपदाओं के प्रकोप से मानव समाज और समग्र जीव-जन्तु प्रभावित होते हैं। प्राकृतिक आपदाओं के कारण समाज में जन-धन हानि के साथ ही पर्यावरण को भारी क्षति पहुंचती है। पर्यावरण के ह्रास से पशुधन और अन्य जीव-जन्तुओं के जीवन-यापन के संसाधनों में कमी हो जाने से वे बड़ी संख्या में काल-कलवित होते हैं। बाढ़, भूकंप, तूफान, ज्वालामुखी के फटने जैसी आपदाओं से लड़ने की क्षमता विकसित कर उसके दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है। केन्द्र और राज्य की सरकारों ने आपदाओं से निपटने के लिए राष्ट्रीय आपदा रिस्पांस फोर्स और राज्य आपदा रिस्पांस फोर्स का गठन कर उनको प्रशिक्षित कर निपटने के लिए संसाधन मुहैया करवाए हैं। केन्द्र सरकार ने राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन में पशुधन को भी प्रमुखता से शामिल किया है। राज्य सरकार ने राज्य में आपदा रिस्पांस फोर्स की एक बटालियन का गठन भी किया है। पशुधन हमारे लिए बेशकीमती है क्योंकि यह कृषक समुदाय की आय और स्थानीय अर्थ व्यवस्था का एक प्रमुख स्रोत है। राजस्थान में सूखा और अकाल की आपदाओं से यहां के श्रेष्ठ पशुधन को नुकसान पहुंचता है। राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय ने पहल कर पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र स्थापित किया है जो वर्ष 2013 से राज्य के पशुपालकों, किसानों सहित बचाव एंजेशियों के संबंधित लोगों को पशु आपदा प्रबंधन की तकनीकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कर किसानों व पशुपालकों को लाभान्वित कर रहा है। यहां के वैज्ञानिक नवीन तकनीकों के विकास के क्षेत्र में भी कार्य कर रहे हैं। लू-ताप और अग्नि कांडों से पशुधन के बचाव की सरल तकनीकों विकसित कर पशुपालकों तक पहुंचाई जा रही हैं। विश्वविद्यालय प्राकृतिक आपदाओं से बचाव की सरल तकनीकों को गांव-द्वीपी में किसानों और पशुपालकों तक पहुंचाने और उन्हें जागरूक करने के उद्देश्य में लगा हुआ है। मुझे खुशी है कि, राजुवास आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र द्वारा हाल ही में राज्य आपदा रिस्पांस फोर्स के 27 जवानों का दस दिवसीय पशु आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण कार्यक्रम बीकानेर में शुरू किया गया है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में पीड़ित पशुओं को आपदाओं से राहत पहुंचाने की विभिन्न तकनीकों, प्राथमिक उपचार सहित अन्य सभी बचाव उपायों के सैद्धांतिक और प्रायोगिक पक्षों से अवगत करवाया जा रहा है। मुझे आशा है कि, राज्य फोर्स के जवान इस प्रशिक्षण को प्राप्त कर ओर अधिक कुशलता के साथ पशुपालकों और पीड़ित पशुधन की सेवा के कार्य में जुटेंगे। जय हिन्द ।

( प्रो. बी. आर. छीपा )



राजुवास, बीकानेर में राज्य आपदा रिस्पांस फोर्स के जवानों का पशु आपदा प्रबंधन का प्रशिक्षण प्रारम्भ



## मुख्य समाचार

### जिलों में उन्नत पशुपालन प्रशिक्षण शिविरों में 35927 कृषक व पशुपालक हुए लाभान्वित

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा 13 जिलों में गत वित्तीय वर्ष में 35 हजार 927 किसानों और पशुपालकों के वैज्ञानिक प्रशिक्षण शिविर लगाकर लाभान्वित किया गया है। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि राजस्थान के 12 जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय एवं प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा वर्ष 2017-18 के वित्तीय वर्ष में 2098 प्रशिक्षण शिविर गावों में तथा केन्द्र के परिसरों में आयोजित किये गये। इनमें से राजुवास के एक मात्र कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर द्वारा हनुमानगढ़ जिले में 64 उन्नत पशुपालन वैज्ञानिक प्रशिक्षणों का आयोजन कर 2221 कृषक-पशुपालकों को लाभान्वित किया गया है। इन शिविरों में पशुपालन विशेषज्ञों ने उन्नत वैज्ञानिक पशुपालन की तकनीकों के प्रति जागरूकता लाकर उन्हें अपनाए जाने के लिए प्रेरित किया। इन शिविरों में उन्नत तकनीकों का प्रदर्शन भी किया गया है।

### विद्यार्थियों ने उद्यमिता प्रोत्साहन योजना में ब्रॉयलर और दूध के उत्पाद तैयार कर लाभ अर्जित किया

वेटरनरी कॉलेज में विद्यार्थियों ने उद्यमिता प्रोत्साहन योजना में इस बार ब्रॉयलर उत्पादन और दूध के विभिन्न उत्पाद तैयार कर बिक्री से अच्छा लाभ अर्जित किया है। इसके लिए विश्वविद्यालय के स्नातक चतुर्थ वर्ष के छात्र-छात्राओं को ब्याज मुक्त राशि मंजूर करके 5 बैच को सुलभ करवाई गई। इन विद्यार्थियों ने उत्पादों की बिक्री कर मूल धन राशि विश्वविद्यालय को वापिस लौटा कर लाभ अर्जित किया। पशुधन उत्पादन तकनीकी केन्द्र की प्रमुख प्रो. बसंत बैस ने बताया कि ब्रॉयलर उत्पादन कार्य के लिए विद्यार्थियों ने 100 चूजों से ब्रॉयलर तैयार किये। दूसरे बैच के विद्यार्थियों ने डॉ. आर.एन. कच्छवाह की देखरेख में दूध से पनीर, लस्सी, खोया और श्रीखंड के उप-उत्पाद तैयार कर बिक्री की। ब्रॉयलर का उत्पादन पोल्ट्री फॉर्म के डॉ. छोटू सिंह और डॉ. संजय सिंह की देखरेख में किया गया। वेटरनरी कॉलेज में प्रतिवर्ष उद्यमिता प्रोत्साहन योजना के तहत छात्र-छात्राओं द्वारा ऐसे उत्पाद तैयार किये जाते हैं।

### अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता संरक्षण दिवस पर प्रश्नोत्तरी और संगोष्ठी का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस पर 22 मई को छात्र-छात्राओं की प्रश्नोत्तरी और संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जीव-जंतुओं के बीच जैव विविधता के बिना पृथ्वी पर मानव जीवन असंभव है। जीव-जंतुओं की विलुप्त हो रही प्रजातियां हमारे लिए आज एक प्रमुख चुनौती है अतः इन प्रजातियों के संरक्षण के लिए प्राकृतिक परिवेश को समुचित और अच्छे ढंग से बनाए रखना जरूरी है। पर्यावरण के अहम मुद्दों में से जैव विविधता का संरक्षण भी महत्वपूर्ण है। राजुवास के पशु जैव विविधता संरक्षण केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में राजुवास के वैज्ञानिक-विशेषज्ञ डॉ. एम.एल. चौधरी, डॉ. अरुण झीरवाल, डॉ. विक्रम और डॉ. नरेन्द्र पूनिया ने जैव विविधता के महत्व और उसके संरक्षण पर व्याख्यान प्रस्तुत कर विद्यार्थियों को जानकारी दी।

### राज्य आपदा रेस्पांस फोर्स के 27 जवानों का प्रशिक्षण प्रारम्भ

वेटरनरी विश्वविद्यालय में राज्य आपदा रेस्पांस फोर्स के 27 जवानों का पशु आपदा प्रबंधन पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण 29 मई से शुरू हो गया। राजुवास के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के सभागार में प्रशिक्षण का उद्घाटन करते हुए जिला पुलिस अधीक्षक श्री सवाई सिंह गोदारा ने कहा कि आपदा अब प्राकृतिक नीयती नहीं जागरूक समाज का ज्वलंत मुद्दा भी है। आपदा पीड़ित पशुओं से मानव समाज सीधे तौर पर प्रभावित होता है अतः इनसे निपटने और दुष्प्रभावों को कम किया जाना जरूरी है। जिला पुलिस अधीक्षक ने बताया कि अनुत्पादक और घूमंतू पशुओं के कारण राजमार्गों पर होने वाली दुर्घटनाओं में 20 फीसदी जन हानि के कारण बनते हैं। लोक प्रशासन संस्थान बीकानेर के अतिरिक्त निदेशक शिशिर चतुर्वेदी ने कहा सम्बोधित किया। राजुवास पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक और प्रशिक्षण प्रभारी डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया कि प्रशिक्षण में राज्य के कई जिलों से आये रेस्पांस फोर्स के 27 जवानों को पशु आपदा के प्रबंधन, प्राथमिक चिकित्सा सहित सभी पहलुओं का 10 दिन तक सघन प्रशिक्षण दिया जाएगा। विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान के साथ ही प्रायोगिक कार्यों का प्रदर्शन भी होगा। केन्द्र द्वारा तीन बैच में 72 जवानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। क्लिनिक्स के पूर्व निदेशक डॉ. टी.के. गहलोत ने भी संभागियों को संबोधित किया। केन्द्र के सह-अन्वेषक डॉ. एस.के. झीरवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

### गाढ़वाला के 39 पशुपालकों को उन्नत पशुपोषण तकनीक का प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा बीकानेर के गाढ़वाला ग्राम में 29 मई को उन्नत पशुपोषण एवं हरा चारा उत्पादन विषय पर एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए उसके खान-पान का उचित प्रबन्धन करना होगा। पशु आहार में हरे चारे का महत्वपूर्ण स्थान है, अतः किसान भाइयों को वर्ष भर चारे की उपलब्धता बनाए रखने लिये हरे चारे के उत्पादन के साथ ही इसको साइलेज बना कर संरक्षित करना चाहिए। प्रशिक्षण शिविर में केन्द्र के विशेषज्ञ श्री दिनेश आचार्य एवं श्री महेन्द्र सिंह मनोहर ने हरा चारा उत्पादन, अजोला उत्पादन तकनीक, हरे चारे के संरक्षण की सायलो बैग तकनीक तथा यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक तकनीक के बारे में पशुपालकों को तकनीकी जानकारी दी। को लाभान्वित किया गया।







# प्रशिक्षण समाचार

### वीयूटीआरसी चूरु द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरु द्वारा 7, 10, 11, 14, 18, 19 एवं 26 मई को गांव झारिया, राजासर बिकान, रायपुरिया, बास घंटेल, मेलूसर, जयसंगसर एवं देपालसर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 236 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 7, 9, 16 एवं 30 मई को गांव मामेर, ख्यालीवाला, कालीया एवं 3 एएस (गुडली) गांवों में तथा दिनांक 21 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 11 महिला पशुपालकों सहित 178 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 8, 9, 11, 16, 21, 23, 24 एवं 25 मई को गांव बारला ओडा, पहाड़ कला, सोनेला, भूतगांव, नारादरा, तलवार का नाका, बसन्त गढ़ एवं निम्बज गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 243 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया-लाड़नू द्वारा 7, 8, 9, 10, 11, 14, 15, 16, एवं 17 मई को गांव केराप, गोदरास, खरेश, खोजास, गांवडी, अगरोट, लोरोली एवं रूवां गांवों में तथा दिनांक 28 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 84 महिला पशुपालकों सहित 303 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 9, 10, 14, 19, 23, 24, 26 एवं 26 मई को गांव अजगरा, टांटोटी, भैरुखेडा, लसाडिया, मेवदाकला, सनोद, पहाड़गंज एवं हरमाड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 232 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी, झूंगरपुर द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झूंगरपुर द्वारा 19, 21, 23, 26, 28 एवं 29 मई को गांव खलील, कांथरी, भोराई, रायकी, हथाई एवं पारडाथूर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 225 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 5, 8, 9, 10, 14, 15, 17, 24, 25 एवं 28 मई को गांव बहनेरा, बिरहवा, सुनारी, मामटोली, रामबाग, घरसौनी, बहताना, भूरा का जटमल,

खोरा, टोहिला एवं बिरार गांवों में तथा 29 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 13 महिला पशुपालक सहित कुल 184 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 14, 15, 16, 17, 24, 25 एवं 26 मई को गांव देवली भांची, चिरोंज, अर्नियामाल, मोटुका, जौलां, लहन और पालड़ा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 175 पशुपालकों ने भाग लिया।

### लूनकरणसर (बीकानेर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर द्वारा 14, 16, 18, 25 एवं 26 मई को गांव रोड़ा, नोखा, कंवलीसर, जैतपुर एवं रानीसर गांवों में तथा दिनांक 30 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 179 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी कोटा द्वारा 240 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 10, 11, 14, 16, 18, 21, 22 एवं 24 मई को गांव आटोन, बांक्या, नोटाना, चारणहेडी, अरण्या, चींसा, धोरी और कछोलिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 240 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 3, 5, 10, 11, 16 एवं 19 मई को गांव सालेरा, खोर, मोगा का खेड़ा, सामरी, बीलोला एवं बनश्टी गांवों में तथा 8, 15 एवं 18 मई को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 197 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 9, 11, 15, 17, 22, 25 एवं 26 मई को गांव प्रथविपुरा, पाटी का पुरा, भागने, झारपुरा, बादलपुर, तहरी का पुरा, भाहरावती एवं शास्तनगर गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 353 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### वीयूटीआरसी, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 21, 22, 24, 25, 26 एवं 28 मई को गांव इन्द्रोका, बड़ली, नारवां, भीरकाली, दर्ईजर एवं केरू गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 204 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

### कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा प्रशिक्षण शिविर

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़) द्वारा 21 एवं 22 मई को गांव परलीका एवं 8 केएम गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 56 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।



# दुग्ध जगत में ऊँट प्रजाति का महत्त्व

प्राचीन काल से ही दूध हमारे भोजन का एक अभिन्न भाग रहा है। जानवरों को दूध, माँस और बोझा ढोने के लिए पाला जाता रहा है। पूरे विश्व के कुल पशुधन का 17 प्रतिशत पशुधन जबकि पूरे विश्व के क्षेत्रफल का केवल 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल भारत में है। दूध के उत्पादन (1377 लाख टन) और खपत में भारत पूरे संसार में पहले स्थान पर है और पूरे विश्व का 16 प्रतिशत दूध भारत में उत्पादित होता है। भारत में दूध उत्पादन 3.3 प्रतिशत जबकि खपत 5 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ रही है जो कि मुख्यतः गोवंशीय प्रजातियों से ही पूरी की जा रही है। इसलिए हमें दूध के अन्य विकल्प ढूँढने की जरूरत है ताकि हर क्षेत्र में दूध उपलब्ध करवाया जा सके और मांग और खपत के बीच की दूरी को कम किया जा सके। मौसम में विविधता की वजह से अतिशुष्क और अतिशीतित क्षेत्रों में दूध की मांग पूरी नहीं हो पाती है इसलिए ऐसे क्षेत्रों में ऐसे दुग्ध उत्पादक जानवरों की जरूरत है जो कि मांग को पूरा कर सकें और साथ ही पौष्टिक भी हो। इसलिए ऊँट एक बेहतर विकल्प है जो कि इस प्रकार के क्षेत्रों में पाया जाता है। एशिया और अफ्रीका में ऊँट बहुतायत में पाये जाते हैं और इनमें इसकी संख्या मुख्यतः चीन, मंगोलिया, सोवियत संघ, रूस, भारत, पाकिस्तान, सुडान, सोमालिया, नाइजीरिया, पश्चिमी सहारा, मिस्र, लीबिया एवं अफगानिस्तान आदि क्षेत्रों में अधिक है। पूरे संसार में ऊँट प्रजाति सबसे ज्यादा सोमालिया में पायी जाती है। भारत में यह मुख्यतः राजस्थान और गुजरात के मरुस्थलीय भागों, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख आदि क्षेत्रों में पायी जाती है। खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार 2008 में पूरे विश्व में ऊँटों की संख्या लगभग 200 लाख थी और 2010 में ड्रोमैडरी प्रजाति के ऊँटों की संख्या 150 लाख अनुमानित की गयी है।

**ऊँट की प्रजातियाँ:** विश्व के विभिन्न भागों में ऊँट की कई प्रजातियाँ पायी जाती हैं लेकिन भारत में ज्यादातर इसकी दो प्रजातियाँ ही पायी जाती हैं:—

**बैक्टोरियन प्रजाति:** यह मुख्यतः ठंडे प्रदेशों जैसे कि जम्मू और कश्मीर, लद्दाख की नोबरा घाटी आदि जगहों पर पायी जाती है और इसके शरीर में दो कूबड़ होते हैं।

**ड्रोमैडरी प्रजाति:** यह मुख्यतः राजस्थान और गुजरात के मरुस्थलीय भागों (बीकानेर, जैसलमेर, कच्छ) और अन्य भागों में पायी जाती है और इसके शरीर में एक ही कूबड़ होता है।

**ऊँट प्रजाति के विशिष्ट गुण:—**

❖ इसके पैर के खुरों की बनावट में हर पैर में दो अंगूठे होते हैं तथा पैर चौड़े, सपाट और गद्देदार होते हैं इसलिए जब यह चलता है तो इसके पैर फेल जाते हैं और रेत में धँसते नहीं हैं क्योंकि इसके चलने पर दोनों पैर शरीर की एक दिशा में मुड़ जाते हैं और दूसरे दोनों पैर शरीर की दूसरी दिशा में मुड़ जाते हैं। इस प्रकार यह जीव एक नौका की तरह गति करता है इसलिए इसे 'रेगिस्तान का जहाज़' भी कहा जाता है। यह प्राणी बहुत कम खा के या बिना कुछ खाये हुए भी 5-7 दिन तक आसानी से रह सकता है और इस दौरान इसकी कार्यात्मक क्षमता में कोई कमी नहीं होती है क्योंकि यह अपने शरीर में उपलब्ध पोषक तत्वों का उपयोग कर लेता है। इसके लिए कोई भी हरे चारे की जरूरत नहीं होती है। यह रेगिस्तान में पाई जाने वाली कंटिली झाड़ियाँ, सूखे पत्ते, बीज आदि खा के भी जीवित रह लेता है।

❖ प्राचीन मान्यताओं के अनुसार ऊँट के कूबड़ को उसके शरीर का जल

संग्राहक माना जाता है लेकिन वास्तव में यह वसा उत्तकों का संग्राहक होता है जो कि भोजन न मिलने की स्थिति में ऊँट द्वारा ऊर्जा स्रोत के रूप में उपयोग किए जाते हैं जिससे कि कूबड़ ढीला होकर सिकुड़ जाता है जो कि आवश्यक भोजन और कुछ दिन तक का आराम मिलने पर यथा स्थिति हो जाता है।

❖ यदि ऊँट को अच्छा नमी-युक्त भोजन खिलाया जाए तो यह जीव बहुत कम पानी के भी जीवित रह सकता है साथ ही साथ ऊँट बहुत कम समय में बहुत ज्यादा पानी पी सकता है और उसे अपने शरीर में सुरक्षित रख कर जरूरत पड़ने पर इस्तेमाल भी कर लेता है।

❖ इसका उपयोग बोझा ढोने में किया जाता है और इसका वजन ज्यादा होने से मांस भी अधिक प्राप्त होता है। इसके बालों से ऊन, ब्रुश, कपड़े आदि बनाए जाते हैं तथा यह जीव अधिक तापमान में भी आसानी से रह लेता है।

**दूध उत्पादन एवं दूध देने की अवधि:**—सुप्रबंधन के द्वारा ड्रोमैडरी प्रजाति के ऊँट से प्रतिदिन 9-14 लीटर तथा 16 से 18 महीने की अवधि में 2722-3629 लीटर तक दूध प्राप्त किया जा सकता है। मरुस्थलीय परिस्थितियों में यह प्रजाति 9 महीने की अवधि में औसतन 1134 से 1588 लीटर तक दूध दे सकती है। ऊँटनी से दिन में 6 से 8 बार तक दूध का दोहन किया जा सकता है। बैक्टोरियन प्रजाति का ऊँट 6 से 18 महीने की अवधि में 5000 लीटर तक दूध का उत्पादन कर सकता है जबकि इसका औसत उत्पादन केवल 800 से 1200 लीटर है। सामान्यतः बैक्टोरियन प्रजाति की दूध उत्पादन क्षमता ड्रोमैडरी प्रजाति से कम होती है। आँकड़ों के अनुसार बैक्टोरियन प्रजाति से अधिकतम दूध (6-7 लीटर प्रतिदिन) कजाकिस्तान में प्राप्त किया गया था जो कि स्थानीय गाय एवं ड्रोमैडरी प्रजाति के दूध उत्पादन से अधिक था। बैक्टोरियन प्रजाति के ऊँट के दूध में वसा की मात्रा अधिक पाई जाती है क्योंकि यह ठंडे वातावरण में रहते हैं और इनके बछड़ों (टोलड़ा) को अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है।

**ऊँटनी के दूध की विशेषताएँ:**—बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, वातावरणीय प्रदूषण आदि की वजह से तापमान में लगातार वृद्धि हो रही है। मरुस्थलीय क्षेत्रों में तापमान वृद्धि अधिक है इसलिए वहाँ गोवंशीय दूध का उत्पादन कम होता है। दुधारू पशुओं में केवल ऊँट की प्रजातियाँ ही ऐसे क्षेत्रों में बेहतर विकल्प है। इसलिए वर्तमान में ऊँटपालन पर जोर दिया जा रहा है और ऊष्ट्र डेयरीयों विकसित की जा रही हैं जहाँ इसके दूध की गुणवत्ता की जाँच करके अधिकतम उपयोग किया जा सके। ऊँटनी के दूध में सभी आवश्यक पोषक तत्व मौजूद होते हैं इसलिए मरुस्थलीय क्षेत्रों में दूध का बेहतर विकल्प है। ऊँटनी का दूध सफेद रंग का होता है और स्वाद में थोड़ा खारा होता है। ऊँटनी के दूध का संयोजन गाय और बकरी के दूध जैसा ही होता है लेकिन इसमें गाय के दूध की तुलना में पानी और प्रोटीन की मात्रा अधिक लेकिन कुल ठोस और वसा की मात्रा कम होती है। विटामिन और खनिज इसमें प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। प्रसवकाल के बाद वसा की मात्रा में वृद्धि एवं प्रोटीन की मात्रा में कमी हो जाती है। ऊँटनी के दूध का सामान्य संयोजन एवं भौतिक गुण क्रमशः तालिका 1 तथा तालिका 2 में दिये गए हैं। वसा और कुल ठोस का अनुपात लगभग 31 प्रतिशत होता है जो कि गाय के दूध के बराबर (32 प्रतिशत) ही है लेकिन भैंस के दूध (42 प्रतिशत) से काफी कम होता है।





**औषधीय गुण:** ऊँटनी के दूध में रक्षात्मक प्रोटीन पायी जाती है जो कि रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। इसमें जस्ता भी पाया जाता है जो कि कोशिका विभाजन के लिए आवश्यक है। मरुस्थलीय क्षेत्रों में इस दूध का उपयोग जलोदर, पीलिया, क्षयरोग, दमा, खून की कमी एवं बवासीर को दूर करने में किया जाता है। विटामिन और खनिज की प्रचुर मात्रा एवं कम वसा के अलावा यह दूध इन्सुलिन का भी अच्छा स्रोत है इसलिए इसका उपयोग मधुमेय के रोगियों के लिए भी किया जा सकता है। एक अध्ययन से ये भी ज्ञात हुआ है कि जो रोगी यकृतशोथ (हेपेटाइटिस) से पीड़ित था, ऊँटनी का दूध पीने के बाद उसके यकृत की कार्यक्षमता में काफी सुधार हुआ।

**ऊँटनी के दूध के उत्पाद:** जिन क्षेत्रों में ऊँट पाये जाते हैं वहाँ पर ऊँटनी के दूध का उपयोग डेयरी खाद्य पदार्थ बनाने में किया जाता है। हमारे देश में भी ऊँट बहुतायत में पाये जाते हैं इसलिए राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर (राजस्थान) ऊँट के विकास के लिए कार्य करता है और वह राजस्थान की सहकारी डेयरी (सरस) के साथ मिलकर ऊँटनी के दूध के विभिन्न उत्पाद बनाने में सफलता प्राप्त कर चुका है। जो लोग ऊँटपालन करते हैं वो इसका उपयोग पीने के लिए या चाय बनाने के लिए करते हैं। राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों में इसका उपयोग खीर बनाने में भी किया जाता है। सुगंधित दूध, कुल्फी, आइसक्रीम, किण्वित दुग्ध उत्पाद, चीज, चाय, कॉफी आदि उत्पाद राष्ट्रीय ऊँट अनुसंधान केन्द्र ने विकसित कर लिए हैं और सरस डेयरी के नाम से इन्हें बेचा भी जाने लगा है। पनीर, खोआ, गुलाबजामुन, पाउडर, क्रीम एवं अन्य उत्पादों के विकास पर भी कार्य किया जा रहा है।

**निष्कर्ष:** राजस्थान के राष्ट्रीयपशु 'ऊँट' को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। देश में दूध की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए ऊँटनी का दूध एक बेहतर विकल्प है लेकिन अभी भी बहुत अनुसंधान कार्यक्रम बाकी है ताकि इसके दूध का अधिकतम उपयोग किया जा सके और इसका आयुकाल बढ़ाया जा सके। इसके दूध में उपलब्ध घटकों की गुणवत्ता और चिकित्सकीय अनुप्रयोगों के कारण इसका उपयोग डेयरी खाद्य पदार्थ बनाने में किया जाता है। लोगों को जागरूक करने की जरूरत है ताकि वे इसकी अहमियत को समझ सकें और ऊँट के संरक्षण और पालन पर जोर दें।

**तालिका 1 ऊँटनी के दूध का सामान्य संयोजन**

संघटक	मान (प्रतिशत)
पानी	86-88
वसा	2.9-5.4
दुग्धशर्करा	3.3-5.8
प्रोटीन	3.0-3.9
खनिज	0.6-1.0
अम्लीयता (प्रतिशत दुग्धिक अम्ल)	0.13-0.21

**तालिका 2: ऊँटनी के दूध के भौतिक गुण**

भौतिक गुण	मान
विशिष्ट गुरुत्व	1.027-1.038
चिपचिपाहट (सेंटी पोइज)	1.72-2.24
सतह तनाव (डाइन प्रति सेंटीमीटर)	56.39-60.93
अपवर्तक सूचकांक	1.340-1.346
हिमांक बिंदू (डिग्री सेल्सियस)	0.51 से -0.61
विद्युत चालकता (मिली मोह)	5.89-6.45

प्रो. डॉ. बसंत बैस (मो. 9413311741)

डॉ. जोरावर सिंह, वेटेनरी कॉलेज, बीकानेर

## जून माह में दुधारु पशुओं का प्रबंधन

इस वर्ष मई के महिने में वातावरण का तापमान काफी ज्यादा है और सभी पशु-पक्षी इससे काफी प्रभावित हैं। जून माह में भी इसी प्रकार उच्च वातावरणीय तापमान रहने की उम्मीद है। सामान्यतः जून आते-आते पोखर-गड्डे व बहुत सी नदियां सूख जाती है और पशुओं को चारे के अतिरिक्त पीने के पानी की सबसे ज्यादा मुश्किल होती है। उच्च तापक्रम, पानी व छायादार पेड़ों की कमी से पशु इस माह तापघात व लू के शिकार हो रहे हैं और इससे सबसे ज्यादा प्रभावित दुधारु गाय-भैंस होती है। अतः पशुपालकों को ग्रीष्म काल में अपने पशुओं का पूर्ण ध्यान रखकर उचित प्रबंधन करना आवश्यक हो जाता है। पशुपालक निम्न लक्षणों के आधार पर यह आसानी से पता लगा सकता है कि उसका पशु-लू अथवा तापघात का शिकार हो गया है, जैसे-पशु छायादार स्थान पर रहना चाहता है, चारा खाना कम एवं पानी पीना बढ़ जाता है, बैठने की बजाय पशु खड़ा रहना ज्यादा पंसद करता है, मुंह खोलकर सांस लेता है, मुंह से लार गिरती है, श्वास दर बढ़ जाती है और शरीर का तापक्रम भी बढ़ जाता है तथा पशु का दुग्ध उत्पादन लगभग शून्य हो जाता है। लू-तापघात व गर्मी के प्रभाव से बचाने के लिए पशुपालकों को निम्न प्रबंधन करना चाहिए:-

1. पशु के बाड़े में पानी का छिड़काव करें व शुद्ध हवा का आदान-प्रदान निश्चित करें।
2. दिन के ठंडे समय में पशु को अच्छी गुणवत्ता का चारा व बांटा दें।
3. पीने का ठंडा पानी उचित मात्रा में दिन में कई बार पशु को दें और पशु जितना चाहे उस पानी पीने दें।
4. पशु को विटामिन ए व ई मिश्रित लवण मिश्रण समुचित मात्रा में देना चाहिए।

यदि इस प्रबंधन के बाद भी पशु के स्वास्थ्य में सुधार नहीं होता हो तो पशुचिकित्सक से सम्पर्क कर उचित ईलाज करायें।

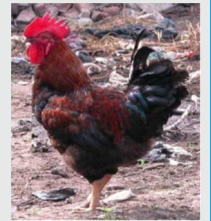
- प्रो. ए. के. कटारिया

प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेंटर, राजुवास (मो. 9460073909)

## देशी मुर्गों की नस्ल को जानें

### पंजाब ब्राउन

पंजाब ब्राउन नस्ल पंजाब और हरियाणा के ग्रामीण इलाकों में पाई जाती हैं। इनका पालन पंजाब और हरियाणा में बड़े एवं छोटे दोनों प्रकार के किसानों द्वारा किया जाता है, क्योंकि इनको मांस एवं अण्डे उत्पादन में उपयोग में लाया जा सकता है। शुरु में इनका पालन केवल अपनी मांस सम्बन्धी आवश्यकता की पूर्ति हेतु लोगों द्वारा किया जाता था, लेकिन बाद में इन्हें आजीविका चलाने का एक जरिया बना दिया गया। इस नस्ल की अन्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:-



1. इनके पंखों का रंग भूरा, लाल और उन पर काले रंग के धब्बे होते हैं।

2. कलंगी लम्बी और लाल रंग की होती है।
3. मुर्ग की वेटल्स मुर्गियों की तुलना में बड़ी और लाल होती है।
4. मुर्ग का भार एक से लेकर दो किलो के बीच और मुर्गियों का भार 1 से 1.5 किलो के बीच होता है।
5. यह अपनी उम्र के 5 से 7 महिनो में अण्डे देना शुरू करती है।
6. यह 60 से 80 के बीच अण्डे देती है।



# देशी गाय का दूध-एक दैवीय वरदान

प्राचीन काल से, गाय के दूध को गौरस और 'अमृत' कहा गया है। इसे एक सम्पूर्ण आहार के रूप में मान्यता प्राप्त है, एवं पालन करने के गुणों के कारण देशी गाय को 'गौमाता' कहा गया है। प्राचीन भारतीय चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद के ग्रंथों जैसे चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, वृक्षायुर्वेद आदि में गौदुग्ध, गौदधि (दही), गौघृत (गाय का घी), गोमय (गाय का गोबर) एवं गौमूत्र, इन पांच – गव्यों (गाय से प्राप्त पदार्थों) के गुणधर्मों का वर्णन करते हुए इनके मानव चिकित्सा में औषधीय उपयोग का वर्णन मिलता है। आयुर्वेद के प्राचीन ग्रंथों में ऐसा वर्णन मिलता है कि प्रकाण्ड विद्वान महर्षि धन्वन्तरि ने स्वयं 'पंचगव्य' की अद्भुत औषधि मानवता को प्रदान की।

**सुश्रुत संहिता** में क्षीर वर्ग में आठ प्रकार के पेय दुग्ध का वर्णन मिलता है एवं गाय के दूध के गुण इस श्लोक में वर्णित हैं –

**अल्पामिष्यंदि गोक्षीरम् स्निग्धं गुरु रसायनम् ।।**

**रक्तपित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ।।50 ।।**

**जीवनीयम् तथा वातपित्तघ्नम् परमम् स्मृतम् ।।**

अर्थात्, गाय का दूध रोगोत्पादक नहीं, स्निग्ध, गुरु, रसायन, रक्तपित्तनाशक, शीतल, मधुररस एवं विपाक में मधुर, जीवनदायक, अतिशयेन वात-पित्तनाशक है। महाभारत में यक्ष-युधिष्ठिर संवाद में यक्ष पूछता है कि "अमृतं किम्" अमृत क्या है? तो धर्मराज युधिष्ठिर उत्तर देते हैं कि "गवामृतम्" अर्थात् गाय का दूध ही अमृत है। अन्य खाद्य पदार्थों से तुलना करने पर गाय का दूध वस्तुतः अमृत ही सिद्ध होता है।

**चरक संहिता** के सूत्र स्थान, अध्याय 27 में लिखा है कि –

**स्वादुशीतम् मृदु स्निग्धं बहलं श्लक्ष्णपिच्छिलं ।**

**गुरु मंदम् प्रसन्नं च गव्यं दशगुणं पयः ।।216 ।।**

**तदेवंगुणमेवौजः सामान्यादभिवर्धयेत् ।**

**प्रवरं जीवनीयानाम् क्षीरमुक्तं रसायनम् ।।217 ।।**

इस सूत्र में गौदुग्ध के, और ओज के दस समान लक्षण बताते हुए गौदुग्ध को ओज को बढ़ाने वाला जीवनीय रसायन बताते हुए श्रेष्ठता का वर्णन है।

भैंस के दूध की तुलना में भी गाय का दूध कहीं अधिक सुपाच्य, बच्चों के लिए उत्तम, सम्पूर्ण आहार है। भैंस के दूध की अपेक्षा देसी गाय के दूध में उपस्थित फ़ैट (चिकनाई) अधिक सुपाच्य और अभीष्ट मात्रा में होने से गाय का दूध स्फूर्तिदायक होता है। आमतौर पर दूध में 83 से 87 प्रतिशत तक पानी, 3.5 से 6 प्रतिशत तक वसा (फ़ैट), 4.8 से 5.2 प्रतिशत तक कार्बोहायड्रेट और 3.1 से 3.9 प्रतिशत तक प्रोटीन होता है। इस प्रकार कुल ठोस पदार्थ (टोटल सॉलिड) 12 से 15 प्रतिशत तक होता है। जबकि लैक्टोस 4.7 से 5.1 प्रतिशत तक होता है। शेष तत्व अम्ल, एंजाइम, विटामिन आदि 0.6 से 0.7 प्रतिशत तक होते हैं।

दूध में पाए जाने वाले प्रोटीन दो प्रकार के होते हैं- 'द्वे प्रोटीन' एवं 'केजीन प्रोटीन'। दूध में पाये जाने वाले 80 प्रतिशत प्रोटीन केजीन होते हैं जबकि 20 प्रतिशत के आस पास भाग 'द्वे' प्रोटीनों का होता है। दूध के कुल प्रोटीन का 30 प्रतिशत भाग बीटा केजीन प्रोटीन होते हैं। बीटा केजीन प्रोटीन के 12 प्रकार ज्ञात हैं जिनमें ए 1 और ए 2 प्रमुख हैं। बीटा केजीन में 209 अमीनो एसिड होते हैं तथा ए 1 और ए 2 प्रकार के बीटा केजीन में केवल एक अमीनो एसिड का अंतर होता है। ए 2 प्रकार के बीटा केजीन की अमीनो एसिड श्रृंखला में 67 वें स्थान पर 'प्रोलीन' अमीनो एसिड होता है जबकि ए 1 प्रकार के बीटा केजीन में प्रोलीन के स्थान पर हिस्टीडीन अमीनो एसिड जुड़ा होता है। ए 1 प्रकार का बीटा केजीन पचने के बाद 'बीटा केजो मोर्फिन-7' (बी. सी. एम. - 7) नामक अफीम प्रकार का मादक पदार्थ (नारकोटिक) बनाता है। ए 2 प्रकार के बीटा केजीन में एमिनो एसिड

श्रृंखला में 67 वें स्थान पर प्रोलीन है और ये अपने साथ की 66 वीं कड़ी आइसोल्यूसीन एमिनो एसिड के साथ मजबूती से जुड़ा होता है और आहार नाल में पाचन के समय एमिनो एसिड श्रृंखला 67 वें स्थान से टूटती नहीं है। अतएव ए 2 प्रकार के दूध से बी.सी.एम.-7 नामक हानिकारक पदार्थ उत्पन्न नहीं होता है।

बी.सी.एम.-7 नामक ये पदार्थ शिशुओं के तंत्रिका तंत्र पर विशेष रूप से हानिकारक प्रभाव डालता है क्योंकि उस समय बी. बी. बी. (ब्लड ब्रेन बैरियर) पूर्ण विकसित नहीं होता है। इसके अतिरिक्त अनुसन्धान द्वारा ये भी ज्ञात हुआ है कि ए 1 बीटा केजीन युक्त दूध पीने तथा हृदय रोग एवं मधुमेह एवं स्नायु तंत्र से सम्बंधित रोगों से भी सम्बन्ध है। बोस्टन के एक विश्वविद्यालय ने पाया है कि पाचन तंत्र की कोशिकाओं में बीसीएम-7 की अधिक मात्रा होने से स्नायु कोशिकाओं में एंटी ऑक्सिडेंट की कमी हो जाती है जिसे ऑटिज्म जैसे स्नायु तंत्र के विकारों से जोड़कर भी देखा जा रहा है परन्तु इस दिशा में अभी अधिक अनुसन्धान करने की आवश्यकता है।

दूध को देखकर इसके ए-1 तथा ए-2 बीटा केजीन युक्त होने का अनुमान नहीं लगाया जा सकता पर पी. सी. आर. अर्थात् पॉलीमरेज चेन रिएक्शन आधारित वैज्ञानिक परीक्षण द्वारा इसे आसानी से पहचाना जा सकता है। इस विधि में दूध के नमूनों से डी.एन.ए.(डीऑक्सीराइबोज न्युक्लीक एसिड) निकाला जाता है तथा ए-1 या ए-2 प्रोब द्वारा उपयुक्त जीन की पहचान की जाती है। यह परीक्षण महंगा होने के साथ साथ सुलभ भी नहीं है। भारत सरकार के करनाल स्थित नेशनल ब्यूरो ऑफ एनिमल जेनेटिक रिसोर्स (एन.बी. ए. जी. आर., करनाल) के द्वारा किये गए शोध में भारत की 15 गौ-नस्लों के 618 पशुओं और आठ भारतीय भैंस-वंश नस्लों के 231 पशुओं से रक्त नमूने (सैंपल) लिए गए थे। शोध के अनुसार भारत की गिर, थारपारकर, राठी, लाल सिन्धी, साहीवाल, मालवी, कांकरेज, हरियाणा, कंगायम, निमाड़ी, अमृतमहल, लाल कंधारी और मेवाती नस्लें ए 2 प्रकार का बीटा केजीन युक्त दूध देती हैं और सभी आठ भैंस-वंश नस्लों में भी ए 2 प्रकार का दूध देने के कारक जीन पाए गए हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि दो गौ-नस्लों, खेरीगढ़ और मलनाड गिड्डा में ए 1 बीटा केजीन प्रोटीन के लिए कारक जीन विदेशी गौवंश के संपर्क के कारण हो सकता है। ए 1 प्रकार का बीटा केजीन अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया तथा यूरोप की गायों के दूध में अधिक पाया जाता है। अधिकांश विदेशी गौवंश (होल्सटीन, जर्सी, रेड डेन आदि) के दूध में ए 1 प्रकार का बीटा केजीन प्रोटीन पाया जाता है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशुविज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर ने देशी गौवंश के संरक्षण और संवर्द्धन के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। विश्वविद्यालय द्वारा, राठी गाय के लिए बीकानेर और नोहर, थारपारकर के लिए चांदन (जैसलमेर) व बीछवाल (बीकानेर), साहीवाल के लिए कोडमदेसर (बीकानेर), गिर के लिए नवानिया, बल्लभनगर (उदयपुर) और मालवी के लिए डग (झालावाड) में, पशु अनुसन्धान एवं प्रजनन केन्द्रों की स्थापना के माध्यम से देशी गौवंश का संवर्द्धन किया जा रहा है। केवल दूध के प्रोटीन के आधार पर ही भारतीय गौवंश की श्रेष्ठता बतलाना अपर्याप्त होगा। भैंस के दूध के फ़ैट ग्लोब्यूल अपेक्षाकृत अधिक बड़े होते हैं तथा पचने में दुष्कर होता है। आयुर्वेद के अनुसार भी भैंस का दूध वातकारक, गरिष्ठ एवं कब्जकारक है। जबकि देशी गाय के दूध को बुद्धि, आयु, शक्ति एवं सौन्दर्य वर्द्धक बताया गया है। एक पुरानी कहावत है – घी खाये मांस बढ़े, अलसी खाये खोपड़ी, दूध पिये शक्ति बढ़े, भुला दे सबकी हेकड़ी।

—प्रो. (डॉ.) ए.पी. सिंह, (94141-39188)

डॉ. प्रतिष्ठा शर्मा एवं डॉ. अशोक गौड़ राजुवास, बीकानेर।





## सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-जून, 2018

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
खुरपका एवं मुहंपका रोग	गाय, भैंस, बकरी,	भरतपुर, दौसा, श्रीगंगानगर, जयपुर, बांसवाडा
गलघोंटू	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, राजसमन्द, पाली, जैसलमेर, बीकानेर, सीकर, हनुमानगढ़, जयपुर, सवाईमाधोपुर, टोंक, बून्दी
न्यूमोनिक- पारस्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, जालौर, जयपुर, सीकर, झुंझुनूं, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सिरोही, बीकानेर
ठप्पा रोग	भैंस	जयपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई-माधोपुर, बाँसवाडा, जयपुर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, भरतपुर, कोटा, बून्दी
बॉटूलिस्म	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, बीकानेर, पाली, श्रीगंगानगर
सर्रा रोग	भैंस, ऊँट	धौलपुर, बांसवाडा, हनुमानगढ़, बून्दी
पर्ण-कृमि	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	श्रीझुंजरगढ़, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाडा, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, सूरतगढ़, भरतपुर, सीकर
पी.पी.आर. रोग	भेड़, बकरी	सवाई-माधोपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, सीकर, जैसलमेर
तीन दिन का बुखार	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर
ताप घात (Heatstroke) व निर्जलीकरण (Dehydration)	सभी पशु-पक्षी	समस्त राजस्थान

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें - प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।  
फोन- 0151-2204123, 2544243, 2201183

### सफलता की कहानी

### पशुपालन व जैविक खेती के सामंजस्य से लखपति बने सहीराम गोदारा

लूनकरणसर के सहीराम गोदारा एक मध्यम वर्गीय किसान परिवार से है लेकिन प्राथमिक शिक्षा तक पढ़े-लिखे होने के बावजूद अपनी मेहनत और दूरदर्शिता के बूते आज एक प्रगतिशील पशुपालक-किसान के रूप में जाने पहचाने जाते हैं। गोदारा ने आधुनिक किसानों के साथ-साथ उन्नत नस्ल के पशुओं का पालन और वैज्ञानिक तौर-तरीकों को अपनाकर सफलता के नए आयाम स्थापित किए हैं। गोदारा ने वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण और अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर के निरन्तर सम्पर्क में रहते हुए और प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेकर पशुपालन में नस्ल संवर्द्धन, कृत्रिम गर्भाधान, खनिज लवण की उपयोगिता, सन्तुलित पशु आहार, कृमिनाशक दवाईयां पिलाना, पशु टीकाकरण, अजोला घास तकनीक आदि की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने राठी, साहीवाल गाय, मुर्गा भैंस, बकरी की शेखावटी, बिल्टल, सिरोही नस्ल, मारवाड़ी घोड़ी नस्ल के उच्च



गुणवत्ता के पशुओं का संवर्द्धन व नस्ल सुधार के कार्यों को अपनाया। साथ ही अपनी खेती योग्य भूमि में इजराईल ड्रिप तकनीक का उपयोग किया और इसे चलाने के लिए सौर ऊर्जा का उपयोग किया। इनके द्वारा पॉली हाऊस/ ग्रीन हाऊस तकनीक द्वारा जैविक सब्जियां तैयार कर आम जन को विषैली सब्जियों के दुष्प्रभाव से बचाने का महती कार्य भी किया गया। इनके द्वारा लगाये गये बागवानी के पौधों जैसे-किन्नु, थाईऐपल आदि से अच्छी किस्म के फल आसानी से उपलब्ध हो रहे हैं। इनके द्वारा प्रतिदिन 180 लीटर दुग्ध का उत्पादन किया जा रहा है। गोदारा द्वारा तैयार उन्नत नस्ल के पशुओं को राज्य सरकार द्वारा आयोजित पशु मेलों में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया है। इनको पशुपालन व खेती से कुल मिलाकर आय लगभग-20 लाख रुपये वार्षिक हो जाती है। आज के बेरोजगारी के युग में गोदारा लगभग-10 लोगों को रोजगार देकर व खुद आत्मनिर्भर बनकर युवाओं के लिए एक प्रेरणा स्रोत बने हैं। सम्पर्क - सहीराम गोदारा, लूनकरणसर, बीकानेर। मोबाईल :



निदेशक की कलम से...

**भेड़ पालन को बनाएं एक लाभकारी व्यवसाय**



भेड़ों की संख्या की दृष्टि से विश्व में भारत का तीसरा स्थान है। राजस्थान में भेड़ पालन महत्वपूर्ण और एक लाभकारी व्यवसाय है क्योंकि फसल उत्पादन वर्षा की अनिश्चितता और कमी के कारण सफल व्यवसाय नहीं है। भारत के शुष्क पश्चिमी क्षेत्र में भेड़ों की दस से अधिक नस्लें पाई जाती हैं। देश में भेड़ पालन प्रायः अल्प एवं मध्यम वर्गीय कृषकों द्वारा किया जाता है। भेड़पालक भेड़ों को बंजर भूमि, खाली खेतों और चारागाहों में चराते हैं। अकाल की भीषण स्थिति में भेड़ पालक भेड़ों के टोलों के साथ लम्बी दूरी तक भ्रमण करते हैं। भेड़ों से मांस, ऊन, खाद और चमड़ी के उत्पादों से आय प्राप्त की जाती है। भेड़ों से अधिक उत्पादन के लिए संतुलित आहार प्रबन्धन जरूरी है। भेड़ों के लिए आवश्यक पोषक तत्व कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा, खनिज लवण, विटामिन और पानी है। इन पोषक तत्वों की पूर्ति हरे चारे, सूखे चारे एवं दाने से की जाती है। इन पोषक तत्वों को सही अनुपात में खिलाया जाना चाहिए। भेड़ों को नीम, बबूल, बोरड़ी, खेजड़ी औरिंजा और अरडू की पत्तियां खिलावें। लवण धातु भी नियमित रूप से दें। वृक्षों की पत्तियां और दलहनी चारा भी उपयोग में लें। घास व अन्य चारा उचित अवस्था में काट कर खिलाना चाहिए। अपने भेड़ों के उत्पादन की जानकारी रखने के लिए मां की उत्पादन क्षमता ज्ञात करें और माहवारी बच्चों का वजन लिखें। स्वास्थ्य की वार्षिक परिचर्या के अनुसार समय पर कृमि नाशक दवा पिलाएं, रोग निरोधक टीके लगायें और बाह्य परजीवी को नष्ट करने के उपाय अमल में लाएं। अपने रेवड़ का आकार सीमित रखें तथा तेज धूप से भी उन्हें बचाने के उपाय करें। वर्षा ऋतु में भेड़ों को सड़ा-गला घास चारा तथा दाना खिलाने से बचाना चाहिए अन्यथा भेड़ों में एसीडोसिस तथा आफरा नामक रोग हो सकता है। भेड़ पालक को अपने रेवड़ में उच्च कोटि के मेढ़ें रख कर उत्तम प्रजनन पद्धतियों को अपनाने से अच्छा उत्पादन मिल सकता है। रेवड़ में मेंढे एवं भेड़ों का अनुपात 1:30 तक सीमित रखना चाहिए। संतुलित आहार प्रबंधन द्वारा भेड़पालक भेड़ों को स्वस्थ रखकर इनसे अधिकतम उत्पादक प्राप्त कर भेड़पालन व्यवसाय को अधिक लाभकारी बना सकते हैं। जय हिन्द ! -प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188

**राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित "धीणे री बात्यां" कार्यक्रम**

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरुवार को प्रसारित "धीणे री बात्यां" के अन्तर्गत जून, 2018 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरुवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरुवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर साय: 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

**मुस्कान !**



क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	डॉ. दिनेश जाम्ब 95213-68148 पशुरोग एवं पशु प्रसूति विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	अश्व प्रजनन से सम्बन्धित समस्याएं और निवारण	07.06.2018
2	प्रो. विजय कुमार चौधरी 9461472793 एल.पी.एम., वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	नवजात बछड़ों की देखभाल	14.06.2018
3	डॉ. हेमन्त जोशी 94136-61235 वेटरनरी कॉलेज, नवानियां	नील गाय से फसलों का बचाव व रोकथाम के उपाय	21.06.2018
4	डॉ. उमेश सालीगराम सुरड़क 9261201109 पशु उत्पाद प्रौद्योगिकी, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां	अजौला एक पशु खाद्य	28.06.2018

**संपादक**  
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह  
**सह संपादक**  
प्रो. ए. के. कटारिया  
प्रो. उर्मिला पानू  
डॉ. नीरज कुमार शर्मा  
दिनेश चन्द्र सक्सेना  
संयुक्त निदेशक ( जनसम्पर्क ) से.नि.  
**संकलन सहयोगी**  
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली  
**प्रसार शिक्षा निदेशालय**  
0151-2200505  
email : deerajuvass@gmail.com

बुक पोस्ट भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

**पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।**

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें।



**1800 180 6224**